जल की माया

डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
पुजार गाँव, टिहरी गढ़वाल (उत्तराखंड)

जल की माया बड़ी निराली,
प्राण फूँकता डाली–डाली।

बच्चे जवान या बूढ़ी नानी,
सबको जीवन देता पानी।

जग में जितने भी पशु–पक्षी,
सबके सब इस जल के भक्षी।

आती खेतों में हरियाली,
जो देती जग को है खुशहाली।

फूल–फल पैदा होते जल से,
सींचें पेड़ों को सब नल से ।

जल से वाष्प फिर बनते बादल।
तब बरसाते धरती में जल,

जमकर बर्फ पिघलकर पानी,
ताप से भाप बनना है कहानी।

शुद्ध रखें हर तरह से सब जल,
सुखमय होगा फिर सबका कल।

चाल खाल और तालाब,
इन्हें बनाकर मिलते लाभ।

घर–घर बनायें वर्षाती टैंक,
सब समझें इनको जल का बैंक।

वर्षा जल बहने न पाए,
रिस–रिस कर धरती में समाये।

बढ़ेगा इससे भू जल स्तर,
हैण्डपम्प काम करेगा तब हर।

नलकूप ट्यूबवेल खूब चलेंगे,
किसानों के चेहरे खिलेंगे।

खेती–बाड़ी साफ–सफाई,
तब सब कुछ हो पायेगा भाई।

भू क्षरण कटाव नहीं होगा तब,
वर्षाती जल बह न पायेगा जब।

इन कामों का सब लें संकल्प,
जल संकट का यह बड़ा विकल्प

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी